सबसे बड़ा उपहार

संसार भर में दिसम्बर माह प्रभु यीशु के जन्मदिवस के रूप में मनाए जाने के लिए प्रसिद्ध है और इस दिन को ''क्रिसमस'' या बड़े दिन के रूप में जाना जाता है। यह निर्णय लेने के लिए कि इसे मनाए जाने को नज़रअंदाज किया जाए या इसे संसार को यीशु के बारे में बताने के लिए एक आरम्भ के रूप में माना जाए, आपको अपनी समझ का इस्तेमाल करना होगा। यदि आप इसे आरम्भ के लिए एक शुरुआत मानने का निर्णय लेते हैं, तो बाइबल की सच्चाई के लिए एक स्प्रिंग बोर्ड (उछाल तख़्ते) के रूप में उपहार देने का इस्तेमाल करने वाला पाठ प्रस्तुत है।

हम में से अधिकतर लोगों को उपहार लेना अच्छा लगता है। वर्षों तक मुझे मेरी अंटी पेटुनिया कई उपहार देती रही है।[1] उपहार पाना अच्छा लगता है; लेकिन उपहार देना इससे भी आनन्दमयी होता है। यीशु ने कहा था कि देना सबसे अच्छी बात है: ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)। हम सभी को यह सबक सीखने की आवश्यकता है और अपने बच्चों को सिखाने की भी।

उपहार देने के मेरे अपने एक पहलू ने हाल के वर्षों में मुझे बड़ी चिंता में डाल दिया है। यीशु ने पहाड़ी उपदेश में, कहा था, ''ज़्योंकि, यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए ज़्या फल होगा? ज़्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? ...'' (मत्ती 5:46, 47)। फिलिप्स के अनुवाद में आयत 47 इस प्रकार मिलती है, ''और यदि तुम आपस में ही एक दूसरे को बधाई देते हो ...।'' प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, जहां हमें परमेश्वर के दो भविष्यवक्ताओं के मारे जाने की बात मिलती है, लिखा है, ''और पृथ्वी के रहनेवाले, ... आनन्दित और मगन होंगे, *और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे,* ... (प्रकाशितवाक्य 11:10)। मैं जो ''उपहार देता'' हूं वह वास्तव में उपहार की अदला बदली करना ही होता है। यदि मैंने अपने बच्चों को फिर से बड़ा करना हो, तो मैं उन्हें उन लोगों को उपहार देने पर ज़ोर देना सिखाऊंगा जो हमें लौटा नहीं सकते। उपहारों के बारे में बाइबल बहुत कुछ बताती है: इब्राहीम ने अपनी रखैलों के पुत्रों को उपहार दिए (उत्पत्ति 25:6)। पूर्व से आए विद्वानों ने यीशु का दर्शन करके ''उसको सोना, और लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाई'' (मत्ती 2:11)। माता-पिता ''अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते'' हैं (मत्ती 7:11)। इस पाठ में हम ''सबसे बड़े उपहार'' पर विचार करेंगे।

सबसे अच्छे उपहार को पहचानना

आपको सबसे अच्छा उपहार ज़्या लगता है ? छोटे लड़कों की नज़र में कोई खिलौना सबसे अच्छा उपहार होता है।[2] लड़कियां सबसे अच्छा उपहार किसी डॉल या गुड़िया को ही कहेंगी। माताओं के लिए यदि कोई उनकी घर की सफ़ाई कर दे तो यह बहुत अच्छा उपहार होगा। पिता के लिए बाकी सबकी इच्छा के अनुसार उपहार देने के लिए *दाम चुकाने* के लिए मिलने वाला धन हो सकता है।

सदियों से, कुछ अद्‌भुत उपहार दिए जाते रहे हैं। राजा नबूकदनेस्सर ने प्राचीन संसार के सात अजूबों में से एक बाबुल के हैंगिंग गार्डन बनाकर अपनी पत्नी को भेंट किए थे जो अपने पहले घर के लिए उदास थी। कहते हैं कि नेपोलियन ने जोसफ़ीन को 880 हीरों का एक मुकुट (शिराभूषण) दिया था। होटल व्यवसाय के एक उद्योगपति, जॉर्ज बोल्ड्ट ने सेंट लारेंस नदी के हज़ार टापुओं में से एक को खरीदकर इसे हृदय के आकार का बनाकर अपनी पत्नी को उपहार में दिया था।[3]

आपको सबसे अच्छा उपहार ज़्या मिला है ? मेरे लिए इस प्रश्न का उज़र देना कठिन होगा; परन्तु जब मुझसे यह प्रश्न पूछा जाता है तो मेरे मन में एक दृश्य आता है। मैं लगभग 10 वर्ष का था और मेरा भाई कोय लगभग 7 वर्ष का। हमें एक वैगन की सख़्त ज़रूरत थी लेकिन हमारी मां और पिता जी ''कड़की'' की बातें कर रहे थे ज़्योंकि हमारे पास इतने पैसे नहीं थे। मेरा भाई और मैं वैगन लेने के लिए बड़े उतावले थे, और मैं उसका नन्हा सा दिल तोड़ना नहीं चाहता था। मैंने उसे बड़े प्यार से समझाया कि हमें वैगन ज़्यों नहीं मिलेगी। मैं हैरान था कि हमें वैगन मिल गई! यह एक शानदार उपहार था।

हमने घर में मुझे और मेरी पत्नी को वर्षों से मिलते आ रहे उपहार रखे हैं। जब भी हम उन्हें देखते हैं तो हमें उन लोगों की यादें उमड़ आती हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं। कई वर्षों तक, मैंने तीस इंच कमर के लिए बनी एक बैल्ट रखी, ज़्योंकि मेरी बेटियों ने यह मेरे जन्म दिन पर दी थी, बेशक मेरी कमर तीस इंच तब भी नहीं थी जब मैं युवक था।

नि:संदेह, सबसे बहुमूल्य उपहार वे होते हैं जिनमें से लोग किसी तरह अपने आपको देते हैं। एक पिता ने अपने लड़के को कागज का एक टुकड़ा यह लिखकर दिया: ''मेरे पुत्र के लिए। मैं तुझे हर रोज़ एक घंटा और रविवार को दो घंटे देता हूं ताकि जैसा तू चाहे वैसे मुझे इस्तेमाल कर सके। स्नेहपूर्वक, तुज़्हारा डैडी।''

हम में से अधिकतर लोग उन शानदार उपहारों के बारे में सोच सकते हैं जो हमें और दूसरे लोगों को मिलते हैं परन्तु मैं यह बताना चाहता हूं कि सबसे अच्छा उपहार *परमेश्वर की ओर से* ही मिला है। हैरान होने की ज़रूरत नहीं है, ज़्योंकि याकूब ने कहा है कि ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उज़म दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है...'' (याकूब 1:17)।

परमेश्वर हमें बहुत कुछ देता है। ''वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और *सब कुछ* देता है'' (प्रेरितों 17:25)। इसमें सब आत्मिक आशिषें शामिल हैं: ''... उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भज़्ति से सज़्बन्ध रखता है, हमें ... दिया है ...'' (2 पतरस 1:3)।

लेकिन मेरे मन में एक विशेष दान बल्कि बहुत ही विशेष उपहार है जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

आपने अनुमान लगा लिया होगा कि मैं आपको किस आयत की ओर ले जा रहा हूं- यूहन्ना 3:16: ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा *कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया,* ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' परमेश्वर ने पूरे संसार से प्रेम किया। उपहार की कितनी अच्छी सूची है! कई बार यह विचार करते हुए कि इस वर्ष कितने लोगों के लिए उपहार खरीदने हैं मुझे लगता है कि खर्च कुछ ज़्यादा ही हो रहा है, लेकिन परमेश्वर के उपहार के सामने मेरा उपहार तो कुछ भी नहीं है। उसने तो अपना उपहार संसार के प्रत्येक व्यज़्ति के लिए दिया है!

सबसे अच्छे उपहार के लिए धन्यवाद देना

सबसे अच्छे उपहार का पहला भाग

''सबसे अच्छे उपहार'' के दो भाग हैं। पहला भाग स्वयं यीशु है: ''परमेश्वर ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया।'' उपहार का यह भाग संसार में एक छोटे बालक के रूप में आया था। आपको चरवाहों से कहे गए स्वर्गदूतों के शज़्द याद होंगे: ''तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; ज़्योंकि देखो मैं तुज़्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिए होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुज़्हारे लिए एक उद्धारकर्ज़ा जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है'' (लूका 2:10, 11)।

यूहन्ना 1:1, 14 में इस जन्म का महत्व दिखाई देता है: ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था''; ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया ...।'' देहधारी हुए बिना, क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात निरर्थक थी। कुंवारी से जन्म लिए बिना परमेश्वर का देहधारी होना असज़्भव था (मज़ी 1:23)। ऐसे लोगों को यीशु का जन्म दिन मनाते देखना कितना बुरा लगता है जो उसके कुंवारी से जन्म लेने की बात का इन्कार भी करते हैं।

परन्तु, यीशु का जन्म चित्र में दिए गिज़्ट बॉज़्स में एक ''पहला अक्षर'' ही था। यीशु ने बहुत ही दरिद्र व विनम्र परिवार में जन्म लिया और उसका पालन-पोषण एक निर्धन के रूप में हुआ। ''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुज़्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ'' (2 कुरिन्थियों 8:9)।

ये सब बातें उस उपहार के पूर्ण प्रकाश की ओर ले जा रही थीं। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:6-8 में इस उपहार के डिज़्बे को खोलना जारी रखा:

> जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का

स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

आइए परमेश्वर के उपहार वाले डिज़्बे के उस उदाहरण की ओर लौटते हैं: बच्चों से यह अनुमान लगाने के बाद कि वह उपहार ज़्या हो सकता है, मैं डिज़्बे की डोरियां खोल देता हूं। खुलने के बाद यह डिज़्बा एक क्रूस का रूप ले लेता है।

मैं बच्चों को समझाता हूं कि परमेश्वर ने अपना पुत्र केवल संसार में भेजने के लिए ही नहीं ''दिया'' बल्कि उसने उसे एक विशेष उद्देश्य अर्थात हमारे लिए क्रूस पर मरने के लिए दिया!

पवित्र शास्त्र बार-बार ज़ोर देकर कहता है कि यीशु का बलिदान एक उपहार था और है: मज़ी 20:28 ज़ोर देकर कहता है कि ''मनुष्य का पुत्र, इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए *अपने प्राण दे।*'' यीशु जब प्रभु भोज की स्थापना कर रहा था तो उसने अखमीरी रोटी ली और कहा, ''यह *मेरी देह* है, जो *तुज़्हारे लिए दी जाती है:* मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (लूका 22:19ख)। गलतियों 1:3, 4 में, पौलुस ने ''हमारे प्रभु यीशु मसीह'' के बारे में लिखा, जिसने *''अपने आपको हमारे पापों के लिए दे दिया।''* गलतियों 2:20 में पौलुस और भी व्यज़्तिगत हो गया जब उसने कहा कि ''परमेश्वर के पुत्र'' ने ''*मुज़्झ से* प्रेम किया, और *मेरे* लिए अपने आपको दे दिया।''

इस विषय पर पौलुस की कलम से लिखी गई आयतों की सूची बहुत लज़्बी है:

> ''... मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिए अपने आप को ... परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया'' (इफिसियों 5:2)।
>
> ''ज़्योंकि ... परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया ... (1 तीमुथियुस 2:5, 6)।
>
> ''उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ज़ा यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया ...'' (तीतुस 2:13, 14)।[4]

इस उपहार के दाम को पूरी तरह समझना हमारे लिए कठिन है। सिसेरो ने क्रूसारोहण को ''सबसे अधिक क्रूर और सबसे भयंकर उत्पीड़न (टॉर्चर)'' कहा था। ज़्लाउस्नर के अनुसार कि ''क्रूसारोहण का आविष्कार मनुष्य द्वारा अपने साथी मनुष्य से बदला लेने के लिए किया जाने वाला सबसे खतरनाक और क्रूरतम मृत्यु के रूप में है।''[5] यशायाह 53:5

[5]

यीशु के क्रूस के कुछ कष्टों का विवरण देता है: ''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों हेतु कुचला गया; हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।'' इन शब्दों को अपने मन में बिठा लें: ''कुचला गया,'' ''ताड़ना,'' ''कोड़े खाने।'' चिकित्सा विज्ञान हमें बताता है कि घाव मुख्यत: पांच प्रकार के होते हैं।[6] यीशु ने हमारे लिए ये सभी घाव सहे:

(1) *कुचलने का घाव,* किसी चीज़ के प्रहार से हुआ घाव। यीशु को मीका 5:1 की भविष्यवाणी के अनुसार, सिर पर सोंटे से चोट मारी गई।

(2) *चीर का घाव,* चीरने वाली चीज़ से होने वाला घाव। किसी क्रूर विशेषज्ञ के हाथ में दिए गए चाबुक से असहनीय कष्ट हो सकता था।

(3) *गहरा घाव,* किसी तीखी चीज़ से होने वाला घाव। यीशु के सिर में मुकुट के रूप में लगे कांटे कम से कम चार इंच लम्बे होंगे। सिपाहियों द्वारा इस मुकुट को उसके सिर पर रखकर इसे सोंटे से मारने से (मत्ती 27:29, 30), उसके सिर में गहरे घावों का एक चक्र बन गया होगा।

(4) *छिद्री घाव,* किसी चुभने वाली चीज़ से होने वाले घाव। हड्डियों के बीच मारा गया लोहे का भाला, जिससे उसकी हड्डियां टूटी तो नहीं पर अलग हो गईं, इससे उसे तीव्र पीड़ा हुई होगी। ''वे मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं'' (भजन 22:16)।

(5) *भेदने वाला घाव,* किसी नुकीली चीज़ से बनने वाला घाव। ''परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला'' (यूहन्ना 19:34)।

जब हम यीशु द्वारा सहे गए आत्मिक संताप को इससे जोड़ते हैं, तो निष्कर्ष निकलता है कि यह संसार का सबसे बड़ा उपहार था। हैरानी की बात तो यह है कि यह उपहार स्वेच्छा से दिया गया था। यीशु ने ज़ोर देकर कहा था, ''... मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझसे छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं'' (यूहन्ना 10:17, 18क)।

दो भागों में दिए गए परमेश्वर के उपहार का पहला भाग यीशु द्वारा हमारे लिए क्रूस पर मरकर अपने आपको देना था। ''परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो'' (2 कुरिन्थियों 9:15)।

उपहार का दूसरा भाग

परमेश्वर के उपहार का दूसरा भाग यीशु के बलिदान का परिणाम अर्थात वह उद्धार है जो क्रूस के द्वारा पहुंचता है! ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन *परमेश्वर का दान है* ''(इफिसियों 2:8)। ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु *परमेश्वर का वरदान* हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)।

अनन्तकाल तक बचाए जाने की संभावना की बात होने पर हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? क्या हम रोमांचित होते हैं, या हमें उबासी आने लगती है? मैं कुछ प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकता हूं, ''यह तो मैंने हज़ार बार सुना है; यह तो वही पुरानी बात है।''

उज़्मीद है कि आप ऐसा नहीं कहते होंगे। आशा है कि आप जानते होंगे कि उद्धार की बात सचमुच में कितनी रोमांचकारी है। जोअ बारनट्ट ने मार्क नाम के एक लड़के के बारे में बताया है जिसे इस बात की समझ है:

> मार्क जब [छुट्टियों] के बारे में सोचता है तो उसे याद आता है कि तेरह वर्ष पहले, जब वह चौदह साल का था तो कैसा लगता था ...।
>
> यह उसके माता - पिता द्वारा मदिरा ढूंढ़ने से पहले की बात है:
>
> ... झगड़े, परित्याग, नौकरी छूटने से बहुत पहले की;
>
> ... उस तलाक से पहले की जिससे मार्क का पिता उससे दो हज़ार मील दूर चला गया और उस दुर्घटना से पहले की जिससे उसकी मां उसे सदा के लिए छोड़कर चली गई;
>
> ... उसके यह जानने से पहले की कि सुधार गृह में छुट्टियां कैसे बीतती हैं;
>
> ... उसे यह पता चलने से पहले कि एक जोड़ [merijuana] पर कुछ धुआं उसके और उस भयानक संसार में दूरी डाल सकता है जिसमें वह रहता था;
>
> ... उसके गिरज़्तार होने से पहले की।
>
> पिछले साल मार्क छूट गया था और उसे एक शिशु गृह में रखा गया। निराशा से सीढ़ी पर चढ़ने के लिए उसका यह पहला कदम था। उसके पालक माता - पिता मसीही थे। अब मार्क को यह समझ आ रहा था कि सचमुच में प्रेम का ज़्या अर्थ है, कैसे किसी की देखभाल की जाती है।
>
> हिचकिचाते हुए वह अपने नये माता - पिता के साथ आराधना के लिए चला गया ...
>
> वहां उसे अपनी उम्र के बच्चे मिल गए। वे उसे अपने साथ ले गए। उसे अपने साथ मिला लिया। उसके साथ खाने पीने लगे। उसे सिखाने लगे।
>
> अंत में, यह जानकर कि अतीत को सदा के लिए मिटाया जा सकता है उसने अपना जीवन प्रभु यीशु को दे दिया। छह महीने बीत गए थे। उसका अतीत अभी भी पीड़ा से भरा, परन्तु उसमें आने वाला परिवर्तन अविश्वसनीय था ...।
>
> यह [छुट्टी] मज़ेदार होगी। उसके पालक माता-पिता उसके साथ रहेंगे। वे उसे वह सारा प्रेम और मोह देना चाहते हैं जिससे वह इतने समय तक वंचित रहा था।
>
> परन्तु [छुट्टियों] के लिए उसकी और भी योजनाएं हैं। वह सुधार गृह में वापस जा रहा है यदि वे उसे जाने की अनुमति दें। वह कहता है, ''मैं उन लड़कों को बताना चाहता हूं कि दलदल से निकलकर यीशु में चलना कैसा लगता है। मैं उन अकेले, ठुकराए हुए बच्चों के सामने खड़ा होकर वे बातें कहना चाहता हूं जो मुझे सबसे महत्वपूर्ण लगी हैं: 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए' '' (यूहन्ना 3:16)।[7]

मेरा मानना है कि यीशु और वह उद्धार जो वह हमें देता है ''सबसे उज़म उपहार'' हैं, और उज़्मीद है कि आप भी यही मानते हैं। इस वर्ष आपको कोई और उपहार मिले या नहीं, परन्तु आपको जो उपहार परमेश्वर ने दिया है उसकी तुलना किसी उपहार से नहीं की जा सकती!

सबसे अच्छे उपहार को स्वीकार करना

परमेश्वर के उपहार को *स्वीकार* करने के बारे में मैं कुछ बातें कहना चाहता हूं। पौलुस ने लिखा है, ''और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि *परमेश्वर का अनुग्रह* जो तुम पर हुआ, *व्यर्थ न रहने दो*''(2 कुरिन्थियों 6:1)। यह आयत इस बात को और मजबूती प्रदान करती है कि परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार ''लेना'' आवश्यक है। यह आयत यह संकेत भी देती है कि इस उपहार को लेकर आप इसे खो भी सकते हैं। इसमें परमेश्वर के उपहारों के सम्बन्ध में व्यक्ति की निजी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया गया है।

हर किसी को निजी ज़िम्मेदारी की समझ नहीं होती है। कुछ लोगों का मानना है कि उद्धार एक उपहार है, इसलिए इसे पाने के लिए हमें प्रयास करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं यह मानता हूं कि आप और मैं परमेश्वर के उपहार को *कमा* नहीं सकते, बल्कि हमें इसे *स्वीकार* करना होगा, और उसके लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है।

''ट्रुथ इन लव'' नामक टेलीविज़न कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्त्ता के रूप में काम करते समय, मेरे भाई कोय ने एक कार्यक्रम में परमेश्वर के अनुग्रह पर संदेश दिया। इसकी प्रासंगिकता बताते हुए, उसने एक शर्ट के बारे में बताया जो हमारी मां ने उसे दी थी। उसने उस उपहार से मिलने वाले लाभ पाने के लिए की जाने वाली बातों को एक - एक करके बताया। उसे सबसे पहले तो, उस शर्ट को खोलना पड़ा था। फिर उसमें से पिनें निकालकर गज़े के कुछ टुकड़ों और पैक करने के लिए लगाई गई प्लास्टिक इत्यादि को निकालना था। फिर जाकर वह शर्ट पहन सकता था। कोय ने हिसाब लगाया कि उसे उस उपहार का लाभ लेने से पहले तेरह अलग - अलग कार्य करने पड़े। उसने कहा, ''ज़्या मैं अपनी मां से यह कहूं, कि मां यह तो उपहार नहीं रहा ज़्योंकि मुझे इसे इस्तेमाल में लाने के लिए पहले तेरह काम करने पड़े थे?'' उसने कहा कि, ''नहीं। यह अभी भी एक उपहार ही है। मैंने तो इस उपहार का लाभ लेने के लिए जो कुछ आवश्यक था वही किया।'' इसी तरह जब मैं और आप वह काम करते हैं जो परमेश्वर हमें करने के लिए कहता है, तो भी उद्धार एक उपहार ही होता है। परमेश्वर के अद्‌भुत उपहार को पाकर, उसे स्वीकार करने पर ही उसका लाभ मिलता है।

हम सबसे अच्छे उपहार को *कैसे* स्वीकार करते हैं? मैं और आप अपने आप इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते, ज़्योंकि केवल प्रभु ही हमें बता सकता है। परमेश्वर के विचार हमारे विचार नहीं हैं; उसके मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं (यशायाह 55:8, 9)। प्रभु ने हमें इस ''कैसे?'' का उज़र दे दिया है।

प्रेरितों 2 अध्याय में पतरस ने यीशु के बारे में बताया था। उसने कहा था, ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (आयत 36)। जिन लोगों ने यह बात सुनी उनके

हृदय छिद गए और वे पुकार उठे, ''हे भाइयो, हम ज़्या करें?'' (आयत 37)। पतरस ने उन्हें बताया, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (आयत 38)। प्रेरितों 22 अध्याय में, एक बार फिर एक पश्चाज़ापी विश्वासी को कहा गया था, ''अब ज़्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (आयत 16)।

उद्धार पाने के लिए, यीशु में विश्वास लाकर, अपने पापों से मन फिराना और बपतिस्मा लेने (जल में डुबोए जाना) आवश्यक है। मैं कुछ शर्तों को पूरा करने की बात नहीं कह रहा बल्कि अपने आपको देने की बात कह रहा हूं! मैं मृत्यु तक समर्पण की बात कर रहा हूं।

परमेश्वर हमारा समर्पण चाहता है। यीशु ने निर्धन विधवा की उसके द्वारा दिए गए चंदे के लिए सराहना की। उसने कहा, ''इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका डाल दी है'' (मरकुस 12:44)। मकिदुनिया के लोगों में भी ऐसा ही समर्पण था। पौलुस ने उनके विषय में लिखा कि, ''उन्होंने प्रभु को, ... अपने तईं दे दिया'' (2 कुरिन्थियों 8:5)।

अपने आपको प्रभु को दे दें, इससे आपके जीवन की प्राथमिकताएं अपने आप ठीक हो जाएंगी। आपको पता चल जाएगा कि आपको अपने समय, धन, शज़्ति और गुणों का ज़्या करना है।

सारांश

यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो'' (मज़ी 10:8ख)। परमेश्वर ने अपना सबसे बड़ा उपहार आपको फ्री दिया है। मेरी प्रार्थना है कि आप अपना जीवन उसे फ्री में दें।

पाद टिप्पणियां

[1]आप इसके स्थान पर आपको मिलने वाले किसी हास्यकर या असामान्य उपहार के बारे में बताकर इसे अपनी इच्छानुसार बदल लें। हमारे यहां कई बार पुरुषों को बहुत ही चमकीली (''आंखें चुंधियाने वाली'') टाइयां उपहार में दी जाती हैं। कई बार लचीली जुराबें भी होती हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि ''उन्हें कोई भी पहन सकता है।'' एक दो बार धोने के बाद उनकी लचक खत्म हो जाती है और मेरे जैसे बड़े पैरों वाले आदमी को नहीं आतीं। ''ऐसी ही बहुत सी'' और चीज़ें हो सकती हैं। जब आप यह तय न कर पाएं कि वह चीज़ ज़्या हो सकती है, तो उसकी जगह इस्तेमाल होने वाले वाज़्य की जगह कोई और वाज़्य चुन लें। [2]अपने क्षेत्र के लिए इस भाग को आवश्यकता के अनुसार बना लें: उन चीज़ों का उल्लेख करें जो प्रत्येक आयु के लोगों को उपहार स्वरूप लेनी अच्छी लगती हैं। [3]इस पैरे में लिए गए तीन उदाहरण जोअ आर. बारनट्ट के ट्रैज़्ट ''द अल्टीमेट गिज़्ट'' (लज़्बक, टैज़्सस: पाथवे पज़्लिशिंग हाउस, 1979) से लिए गए हैं। [4]आपको ध्यान देना चाहिए कि नये नियम में परमेश्वर ने हमें साल में एक बार यीशु का जन्म दिन मनाने के लिए नहीं कहा, बल्कि उसने हमें हज़्ते में एक बार यीशु की मृत्यु को स्मरण रखने का निर्देश अवश्य दिया है। पहला कुरिन्थियों